REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 10 | JULY - 2024

"छत्तीसगढ़ का प्रयाग-राजिम"

डॉ. दीप्ती वर्मा
(सहायक प्राध्यापक) आंजनेय विश्वविधालय रायपुर (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ प्रकृति की गोंद में बसे होने के कारण प्राकृतिक दृश्यों से भरा हुआ है। प्राचीन साम्राज्यों एवं राज्यों को केन्द्रस्थल हाने के कारण अनेक ऐतिहासिक दर्शनीय स्थानों से परिपूर्ण है। साथ ही धार्मिक, सम्प्रपदायों की उत्पति तथा प्रचार स्थली होने के कारण यहाँ अनेक धार्मिक स्थान हैं। यहाँ गोदावरी, शबरी, इन्द्रवती, महानदी, शिवनाथ, सोन, नर्मदा, आदि नदियों के पावनतटों पर अनेक राज्यों तथा सम्प्रपदायों का उदय और अस्त हआ है। परिणामस्वरूप उनके अवशेष दुर्गों और राज-प्रसादों, मंदिर, चैत्यों, आश्रमों और क्षेत्रों के रूप में आज भी उसके गौरवमय अतीत की याद दिला रहें हैं। इन प्राकृतिक स्थलों की शिलाओं पर प्राचीन इतिहास और पुरातन की अमर कहानी अमिट अक्षरों में अंकित है। प्रकृति और मानव दोनों के सम्मिलन से इस प्रदेश में अनेक महत्वपूर्ण दृश्यों और स्थलों की सृष्टि हुई है।

जिसमें छत्तीसगढ़ का प्रयाग राजिम का नाम विशेष रूप से उल्लेखनिय है, यहाँ अनेक प्रसिध्द मंदिर हैं, जो जनता की धार्मिक आस्था का कन्द्र हैं। वहाँ स्थित राजीव लोचन मंदिर, कुलेश्वर, राजेश्वर आदि देवालय दर्शनीय स्थल हैं। प्राचीन स्मारकों को समेटे यह संस्कारधानी प्रसिध्द है। पर्यटन की दृष्टि से भी नगरी अद्वितिय है।

राजिम का प्राचीन नाम देवपुर था। पौराणिक कथाओं में राजिम को देवपुरी सम्बाधित किया गया है। यह स्थान कभी मुनि, योगियों और तपस्वियों की तपोभुमि थी। इसलिये यह देवपुरी नगरी मानी जाती थी। एक प्राचीन ग्रन्थ के अनुसार राजिम में राजा सोम और उनके द्वारा सम्पादित यज्ञ का उल्लेख मिलता है। छत्तीसगढ़ जनपद में राजिग एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। रायपुर जिले के विद्रानवागढ़ तहसील का यह प्राचीन नगर सभ्यता, संस्कृति और कला की अमूल निधि संजोये हुए आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है।

यह कस्बा रायपुर से 29 मील दूर महानदी के दाहिने तट पर बसा हुआ है, जहाँ महानदी में पैरी और सोढ नदियाँ आकर मिलती है। यहाँ मंदिरो की संख्या पर्याप्त है, जिनमें राजीव लोचन का मंदिर प्रधान है। इस मंदिर को छत्तीसगढ़ के अब तक के ज्ञात सभी मंदिरों में प्राचीनतम माने जाने में कोई आपत्ति नही होती यद्यपि पश्चातवर्ती काल में इस मंदिर का अनेक बार जीर्णोध्दार होने से, इसमें अनेक परिवर्तन और परिवर्द्धन हुए हैं और अब वह मूल रूप में नहीं है। एक बात स्मरण रखने योग्य है

कि राजिम के इस मंदिर में निर्माणकाल से पूर्व समय में बना हुआ मल्हार के समीप बुढ़ीखार नामक ग्राम में एक विष्णु मंदिर था, जिसमें स्थापित विष्णुजी उसो रूप में प्राप्त हुई हैं।

जहाँ तक राजिम नाम की उत्पति का सम्बन्ध है, तो इसका संबन्ध राजीव या राजू नाम की तेलिन से जोड़ा जाता है। पर यह स्मरण रखने योग्य है कि कहीं-कहीं राजीम का नाम कमलक्षेत्र या पद्मपुर भी कहा गया है, और राजीव शब्द का अर्थ भी कमल ही होता है। मंदिर के भीतर बायें हाथ की ओर दीवाल में दो शिलालेख है। इसमें से एक बहुत प्राचीन है और उसके अक्षर क्षतिग्रस्त हो गये है। दूसरा शिलालेख कम प्राचीन प्रतीत होता है।

राजीव लोचन का मंदिर पंचायतन शैली का है। मुख्य मंदिर विस्तृत ऊंचे चबूतरे पर बनाया गया है। उसके चारों ओर चार देवलिकाएँ अर्थात छोटे मंदिर बनाये गये हैं। मुख्य मंदिर के तीन भाग है। मंडप और दक्षिण-पश्चिम ओर के कोनों से सीढ़ियों बनाई गई हैं, जिनपर चढकर मंदिर में प्रवेश किया जाता है। मंडप के बीचों बीच स्तम्भों की दो पक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में छः स्तम्भ हैं। स्तम्भों और स्तम्भिकाओं की बनावट में भेद है जिससे यह अनुमान किया जा सकता है कि इन दोनों का निर्माण काल अलग-अलग है। बीच में स्तम्भ वर्गाकार है, इनके निचले भाग सादे हैं किन्तु ऊपर के भाग अंलकृत हैं जबकि बाजू की स्तम्भिकाआ पर ऊँची-ऊँची प्रतिमाएँ बनाई गई हैं। ये प्रतिमाएँ गंगा, यमुना, बराह, नरसिंह, दुर्गा, सूर्य आदि की हैं। गर्भगृह में भगवान विष्णु की चतुर्भुज प्रतिमा है। वे अपने चारों हाथ में क्रमशः गदा, चक्र, शंख और पद्म धारण किये हुए हैं।

राजिम में राजीव लोचन मंदिर के अतिरिक्त जगत्राथ मंदिर, राजेश्वर मंदिर, दानेश्वर मंदिर, कुलेश्वर महादेव, रामचन्द्र मंदिर, पंचमेश्वर महादेव का मंदिर, राजिम का तेलीन मंदिर, भूतेश्वर महादेव मंदिर, सोमेश्वर महादेव मंदिर भी तात्कालीन वास्तुकला का परिचय देते हैं। इन मंदिरों में देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ, सौन्दर्य प्रतीक शालभंजिका, कल्पलता, तथा अन्य मूर्तियों का अंकन मिलता है। छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक जन जीवन से संबन्ध इस अंचल का प्रयाग राजिम अपनी अनेक विशिष्टताओं से युक्त है। प्राचनीकाल से वर्तमान युग तक निरंतर प्रवाहित चित्रोत्पला की धारा की तरह इसका आध्यात्मिक महत्व भी विद्यमान है। समय के साथ युग बदलता रहा पर यहीं की मंदिर, मूर्तियाँ स्थापत्यकला दर्शकों के लिए जिज्ञासा और आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं।

म.प्र. के पूर्वी भाग अर्थात छत्तीसगढ़ का महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केन्द्र राजिम शताब्दियों से जन-जन का श्रध्दा कन्द्र बना रहा है। प्राचीन कोसल अथवा दक्षिण कोसल की इस ऐतिहासिक नगरी को इस अंचल की सांस्कृतिक चेतना का केन्द्र माना जाता है। धार्मिक दृष्टि से राजिम को छत्तीसगढ़ का प्रयाग कहा जाता ह। राजिम में प्रवाहित तीन नदियों की जलधारा में अस्थि विसर्जन, पिण्डदान भी किया जाता है।

छत्तीसगढ़ का यह क्षेत्र आध्यात्मिक समृध्दि की कहानी कहता है। कुंभ का अर्थ होता है घड़ा, अमृत से परिपूर्ण घट। महानदी, पैरी और सोंदूर का अमृत तुल्य जल राजिम में एक घट का निर्माण करता है। इस घट से जन-जन को अमरत्व का आशीर्वाद मिलता है। छत्तीसगढ़ के सुपरिचित पुरात्तववेत्ता डॉ. विष्णु सिंह ठाकुर का कहना है, राजिम पांचवा कुंभ के स्वरूप पाने का पूर्ण अधिकारी है क्योंकि जहां संत समागम हो, यज्ञ हो, कल्पवास हो वहीं तो कुंभ है। छत्तीसगढ़ भाग्यशाली है, जो इस आध्यात्मिक युग में भी धार्मिकता की मिसाल कायम कर रहा है। छत्तीसगढ़ की धार्मिकता, राजिम का इतिहास, उसकी प्राकृतिक संपदा, महानदी की पौराणिकता, लोमष ऋषि का आश्रम, माघ मास और कुंभ तिथियों का महात्तम सब मिलकर राजिम को कुंभ का अधिकारी बनाते हैं। राजिम के राजीव लोचन मंदिर का पुरातात्विक महत्व भी ह।

राजिम शैव और वैष्णव दोनों मतों का मिलन स्थल है। ऐसा अद्भूत संगम कहीं और देखने को नहीं मिलता है। राजिम का मेला माघ पूर्णिमा में प्रारंभ होकर महाशिवरात्रि में संपत्र होता है। पूर्णिमा को भगवान नारायण का दिन माना जाता है और महाशिवरात्रि तो शिव का दिन है ही।

राजिम मेले की गिनती राज्य के विशालतम मेलों में है। राज्य बनने के पश्चात् क्रमशः इस मेले ने न सिर्फ अपना पुराना आकार फिर से पाया है, बल्कि इसके स्वरूप और आकार में खासी बढ़ोत्तरी हुई है।

किसी भी क्षेत्र के इतिहास, उसकी संस्कृति और सभ्यता से सीधे परिचित होने के लिये पर्यटन सबसे शक्तिशाली माध्यम है। राजिम का महत्व धार्मिक एवं आध्यात्मिक तथा गौरवशाली मेला के कारण जीवन की संस्कृति से जुड़ा है और इन सबके मध्य यदि हम पर्यटन की निगाह से देखें तो अभी बहुत कुछ करना शेष है। राजिम पर्यटन स्थल तो है और यहां पर पर्यटन विकास की असीम संभावनाएँ है, जिसे अनुकूल बनाना होगा ताकि भविष्य में महत्वपूर्ण ढंग से आधुनिक पर्यटन का केन्द्र बन सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हीरालाल शुक्ल छत्तीसगढ़ ज्ञानकोष मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2003 पृ. 303
2. भगवान सिंह वर्मा छत्तीसगढ़ का इतिहास मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 1991 पृ. 293
3. मदन लाल गुप्त छत्तीसगढ़ दिग्दर्शन (द्वितिय भाग) भारतेन्दु हिन्दी साहित्य समिति, 1993 पृ. 253
4. हीरालाल शुक्ल पूर्वोध्दत, पृ. 320
5. प्यारलाल गुप्त प्राचीन छत्तीसगढ़ रविशंकर विश्वविधालय रायपुर, 1973 पृ. 162-163
6. डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र डॉ. लक्ष्मीधर ज्ञा छत्तीसगढ़ का राजनितिक एवं सांस्कृतिक इतिहास सेन्ट्रल बुक हाउस, रायपुर, 1998 पृ. 183
7. ललित कुमार नैय्यर राजिम माहात्म्य पृ. 4, 1977
8. हरिभूमि लेख पृ. 1. 1 फरवरी 2007